B-344
L-33
Ethics

## किन-किन मुल्यों का सुदृढ़ीकरण

- शासन व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का आशय उनसे है जो प्रशासनिक निर्णय एवं क्रियाकलापों में होने चाहिए जैसे- सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, करूणा, परानुभूति न्यायप्रियता, संवेदनशीलता, प्रेम एवं सद्भाव आदि।

- लाभ आवश्यक क्यों ?

- सुशासन एवं नैतिक शासन की स्थापना में सहायक।
- नीति एवं योजनाओं का प्रभावी एवं कुशल क्रियान्वयन।
- सेवाओं की गुणवत्तापूर्ण आपूर्ति।
- लोक निधि का सदुपयोग।
- लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना साकारित।
- "SMART" शासन की स्थापना।
- जन केन्द्रीत शासन की स्थापना।
- भ्रष्टाचार पर नियंत्रण।
- लाल-फीताशाही पर नियंत्रण।

प्रशासन में नैतिक मूल्यों के सशक्तिकरण के उपायों को तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है-

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

| वैधानिक संस्थागत उपाय | नागरिक-प्रशासन सहभागिता | तकनीकी |
| --- | --- | --- |
| - BNS | - सूचना का अधिकार | ई-गवर्नेंस |
| - आचरण संहिता | - नागरिक अधिकार घोषणा पत्र | बायोमैट्रिक प्रणाली |
| - भ्रष्टाचार निवारक कानून | - जनहित याचिका | - D.B.T |
| - CAG | - सामाजिक अंकेक्षण | - RTI |
| - राज्य सतर्कता आयोग | - जन-जागरूकता/ जन-सहभागिता | - Digital India |
| - ACB | जन-सशक्तिकरण | - C.C.T.V |
| - CBI | - सिविल सोसायटी | - G.P.S तकनीकी की मदद |
| - लोकपाल और लोकायुक्त | | - मिशन कर्मयोगी |
| - लोकसेवा गारंटी एक्ट | | - समय-समय पर प्रशिक्षण सत्र |
| | | * P4 की अवधारणा (प्रदर्शन आधारित पेमेंट, प्रमोशन और पेंशन) |

## अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो तथा निधि व्यवस्था में नैतिक मुद्दे:-

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ देश विकसित और सम्पन्न हैं जबकि कुछ विकासशील, तो अनेक देश निर्धन और पिछड़े हैं।

कहा जाता है कि एक न्यायसंगत अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना होना चाहिए।



KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इसके लिए पर्यावरण मित्र तकनीक एवं आर्थिक संसाधनों तक विकासशील एवं गरीब देशों की भी पहुँच होनी चाहिए ताकि "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा को साकारित किया जा सके।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में विभिन्न देशों में सेवाओं और वस्तुओं का आदान-प्रदान बढ़ा है और आर्थिक अंतर निर्भरता में वृद्धि हुई है इन्हीं सन्दर्भों में फंडिंग के नैतिक मुद्दे उभर के सामने आये हैं।

भारतीय संविधान के भाग-4 (अनुच्छेद 51) में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता पर बल दिया गया है कि भारत अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में—

1. अंतर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का
2. देशों के मध्य न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंधों को बनाये रखने का।
3. एक दूसरे के व्यवहारों में अन्तर्राष्ट्रीय विधि और सन्धि बाध्यताओं के प्रति आदर बढ़ाने का
4. अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा निपटाने का।

उपरोक्त मनतव्य अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ में मार्गदर्शन का कार्य करते हैं।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

## अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के नैतिक मुद्दे

### 1. पर्यावरणीय मुद्दे :-

- विकसित एवं सम्पन्न देशों के द्वारा कार्बन उत्सर्जन को रोकने हेतु विशेष फंड एवं पर्यावरणीय मित्र तकनीक न देना, दूसरी ओर वे अन्य देशों पर कार्बन उत्सर्जन कम करने पर दबाव डालते हैं।

### 2. परमाणु निरस्तीकरण (दोहरा रवैया। विकसित देशों द्वारा) :-

$P_5$ देश स्वयं परमाणु हथियार रखते हैं और अन्यों के लिए प्रतिबंधित करते हैं।

### 3. आतंकवाद का मुद्दा :-

- दोहरा रवैया, स्वयं के लिए आतंकवाद और दूसरे देशों में होने पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानवाधिकार की लड़ाई।

### 4. व्यापार का मुद्दा :-

श्रम मानक और पर्यावरणीय मानक के आधार पर होने वाले अन्य देशों के आयात को रोकना।

### 5. आश्रय का मुद्दा / शरणार्थी समस्या :-

IMF और World bank जैसी संस्थाओं पर

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

विकसित देशों का नियंत्रण है। ऐसी स्थिति में जब ये अन्य देशों को ऋण या अनुदान देते हैं तो उसके साथ विभिन्न शर्तों को जोड़ देते हैं जो विकसित देशों के लिए फायदेमंद है।

कई देश दूसरे देशों को आर्थिक सहायता प्रदान कर उसे ऋण जाल में फंसा देते हैं उस देश के आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं। मन माफिक राजनीतिक सत्ता की स्थापना का प्रयास करते हैं। इस प्रकार वे इस देश की आंतरिक सम्प्रभुता पर प्रहार करते हैं। फंडिंग करते समय अपने आर्थिक और सामरिक हित को वरीयता देते हैं।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR